मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- हरियाणा राजभवन से कमीशन एजेंट की छुट्टी
- धंधेबाज़ों को नहीं सुहाये सी पी सुभाष यादव — 3
- जेएनयू छात्र नेता कन्हैया कुमार को जमानत
- राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रद्रोह — 4
- 11 फरवरी को जेएनयू में कन्हैया कुमार का भाषण — 5
- ईएसआई मेडिकल कॉलेज की मान्यता रद्द होने के कगार पर — 8

वर्ष 29 अंक 9 फरीदाबाद, बुधवार 16-31 मार्च 2016 फोन : - 9999595632 2 ₹

छी छी रविशंकर! छी छी तेरा सुदर्शन महोत्सव!

संस्कृति का पर्यावरण से क्या नाता ?

छी छी रविशंकर ने दिल्ली में यमुना तीरे 11-13 मार्च के संस्कृतिक महोत्सव से यह तो निर्विवाद सिद्ध कर ही दिया कि संस्कृति का एकमात्र सम्बन्ध पैसा कमाने से रह गया है। जितना बड़ा पैसेबाज संस्कृति का ठेकेदार होगा, उतना ही उसे राज्य का सहयोग मिलेगा। जितना ही वह कानूनों की धज्जियां उड़ायेगा, उतना ही कानून के रक्षक उसकी पीठ थपथपायेंगे। राम रहीम और रामदेव जैसे अध्यात्म भुनाने वाले व्यवसायी जिन ऊंचाइयों को नहीं छू सके हैं, छी-छी रविशंकर ने उन तक पहुंच कर गिनीज़ बुक में अपना नाम दर्ज करा लिया है। प्रदूषण की मारी यमुना नदी को पूरी ध्वस्त करने वाले इस आयोजन को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपनी उपस्थिति से चार चांद लगा ही दिये बेशक पर्यावरण को पूर्ण-ग्रहण क्यों न लग गया हो।

दिल्ली, मज़दूर मोर्चा व्यूरो

छी छी के दो दावे बेहद दिलचस्प हैं।

जीने की कला	भगोड़ा होन की कला	झूठे जुमलेबाजी की कला

आयोजन को नेशनल ग्रीन ट्रब्यूनल (एनजीटी) में चुनौती दिये जाने पर छी छी ने दावा किया कि कभी उन्होंने इसी यमुना की सफ़ाई की कवायद के दौरान करीब 500 टन कचरा निकाला था। वे यह बताना भूल गये कि यमुना में लाखों टन कचड़ा भरा है जो सरकारों की मेहरबानी से ही सम्भव हो सका है। इन्हीं सरकारों के सहयोग से छी छी का आयोजन हो रहा है। रही 500 टन कचड़ा हटाने की बात तो इसमें क्या खास हुआ? चन्द लाख में कितने ही स्वयंसेवक मज़दूर इस काम को करने के लिये मिल जायेंगे। लगता है शान्ति के लिये नोबेल पुरस्कार का आपका दावा इस आयोजन से निश्चित ही और मज़बूत हो जायेगा। वैसे स्वयं मोदी भी इस पुरस्कार की आस में पाक प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की मेहमाननवाज़ी भुगत आये हैं।

छी छी का दूसरा बयान यह दिखाता है कि वे किस तबके के अध्यात्मिक नुमाइंदे हैं। उनके अनुसार सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे नक्सली हो जाते हैं। 'सरकारी स्कूल ' और 'नक्सली' शब्दों का इस्तेमाल वे कुछ इस तरह करते हैं जैसे कि इनसे बढ कर गलीज गाली हो नहीं सकती। दरअसल सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले करोड़ों बच्चे और नक्सली हिंसा में धकेल दिये गये लाखों युवा उस आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि से आते हैं जिसका शोषण करके छी छी के शिष्य समृद्धि बटोरते हैं।

कौन लोग हैं जो छी छी की चेलागिरी को लेकर व्याकुल रहते हैं? यह खाया-पीया-अघाया और नोटों में लोटपोट रहने वाला अय्याश वर्ग है जिसे मखमल के गद्दे पर भी नींद आनी भारी हो जाती है। उसे एक ऐसी अन्तरात्मा की तलाश रहती है जो उसके पापों को पुण्य की शक्लो-सूरत दे सके। इसी का माहिर है छी-छी रविशंकर। संस्कृति महोत्सव से पहले प्रेसवार्ता में उसने दावा किया कि वह दिल्ली वासियों के लिये एक जादू छोड़ कर जायेगा। यही है उसका जादू जिसकी जरूरत सिर्फ़ धन-पशुओं को पड़ती है।

आम दिल्लीवासी से पूछिये जिसकी जिंदगी आयोजन के इन तीन दिनों में नर्क बना दी गयी। घंटों-घंटों के ट्रैफ़िक जाम, डेलीगेट्स के रास्तों से दिहाड़ीदारों का निष्कासन और धर्म व बाज़ार के कॉकटेल का विज्ञापित माहौल आम आदमी को सांस नहीं लेने दे रहा था। इस यमुना खादर की हज़ारों एकड़ जमीन से फ़सलें उजाड़ कर इस आयोजन के नाम पर उनके मुंह का निवाला छीन लिया गया और रोते-पीटते किसानों को क्षतिपूर्ति के नाम पर नाम-मात्र के मुआवजे का झुनझुना पकड़ा दिया। देश की राजधानी में यह जनविरोधी, यमुना विरोधी और पर्यावरण विरोधी शो उन्हीं बेहाल करदाताओं के पैसे पर पलने वाली पुलिस, फ़ौज, सी पी डब्लू डी आदि सरकारी मशीनरी द्वारा कराया गया। संसद और सर्वोच्च न्यायालय इसके मूक गवाह बन कर रह गये।

छी छी की एन जी टी से कैसी लड़ाई, चोर-चोर मौसेरे भाई

एन जी टी का चेयरमैन स्वतंत्र कुमार शातिरी में सानी नहीं रखता। पंजाब-हरियाणा हाई-कोर्ट का जज रहते हुए उसने अपने दल्लों से पीआईएल डलवाने और उसकी आड़ में वसूली का खेल जमकर खेला। यही क्रम सर्वोच्च न्यायालय और एनजीटी में आने के बाद भी चलाते रहे। छी छी को नोटिस भी इसी कड़ी का हिस्सा हो सकता था। पर छी छी खुद इतना बड़ा मगरमच्छ निकला कि स्वतंत्र कुमार ने उसे मछली समझने की भूल से जल्द ही तौबा कर ली।

एनजीटी की अपनी बनायी जांच समिति ने पर्यावरण को 124 करोड़ के नुक्सान का आकलन दिया था। इसके बावजूद स्वतंत्र कुमार ने छी छी पर केवल 5 करोड़ का जुर्माना लगाया और फ़िर केवल 25 लाख लेकर आयोजन होने दिया। तुर्रा यह कि छी-छी ने प्रेस में बयान देकर सार्वजनिक रूप से घोषित किया हुआ है कि जेल चला जाऊंगा पर जुर्माना नहीं दूंगा। जाहिर है उसे जेल भेजने की औकात न सरकार में है और न न्यायपालिका में।

ख़बर दार

विजय माल्या से पंगा न लेना !

स्टेट बैंक समेत सरकारी बैंक सर्वोच्च न्यायालय के सामने विजय माल्या के खिलाफ पासपोर्ट जब्ती और गिरफ्तारी का आवेदन लेकर तब खड़े हुए जब वह हफ्ता भर पहले ही देश छोड़ कर जा चुका था। बैंकों को उसके पलायन की जानकारी थी और वे खालिस ड्रामा कर रहे थे। ऐसा ही पाखंड इन बैंकों ने तब किया जब पूर्व में माल्या से कर्ज वसूली पैकेज के नाम पर उसे और आठ हजार करोड़ बतौर कर्ज पकड़ा दिया। तब भी स्पष्ट था कि जो माल्या अपनी पुरानी देनदारियां जानबूझ कर नहीं चुका रहा और जिसने तमाम कर्मचारियों को वेतन देना भी बंद कर दिया हो वह इस आठ हजार करोड़ की रकम को भी डकार ही जायेगा। माल्या से मजदूर मोर्चा का काल्पनिक साक्षात्कार जिसमें इस नूरा कुश्ती और खुली लूट से जुड़े सवाल उठे।

म.मो.- माल्या जी क्या आपको कानून से जरा भी डर नहीं लगता ?

माल्या - जिस कानून से कुछ बिगड़ता न हो उससे क्या डरना ?

म.मो.- कानून आप जैसे कर्जदारों का कुछ बिगाड़ा क्यों नहीं पाता ?

माल्या-हम कानून ही ऐसे बनाने देते हैं कि अनाप-शनाप कर्ज भी ले सकें और वापस भी न करें। देखते नहीं बैंकों से कहा जाता है कि या तो हमें पुराने कर्जे उतारने के नाम पर पहले से भी बड़े कर्जे देते रहें या फिर पुराने कर्जों को बट्टे-खाते में डालकर समय-समय पर अपनी बैलेंस शीट साफ करते रहें।

म.मो. - रिजर्व बैंक क्या कहता है ?

माल्या - कहना क्या है ? आपने भी देखा होगा कि रिजर्व बैंक का गवर्नर रघुराम राजन सरकार को बीच-बीच में बैंकों के न चुकने वाले बड़ते कर्जों को लेकर आगाह करता रहता है। वह कभी नहीं कहता कि हम जैसे कॉर्पोरेट जो कर्जे नहीं चुकाते, को जेल में डालो। न ही वह उन बैंकरों को जेल भेजने को कहता है जिनकी मिली भगत से हम जैसों को कर्जे मिलते रहते हैं। हां सरकार को दी जाने वाली उसकी चेतावनी का हम सभी को फायदा यह होता है कि हमारे कर्जों को बैंक बट्टे-खाते में डालते चले जाते हैं और हमें कोई पूछता नहीं। यही तो हमें चाहिए।

म.मो.- पर आप पर विशेष मेहरबानी क्यों?

माल्या - विशेष मेहरबानी नहीं, यह तो रूटीन मेहरबानी है। मुझसे ज्यादा तो अम्बानी और अडानी पर मेहरबानी हो रही है, जिंदल और गोयल और मित्तल चाहे किसी को भी ले लो सभी पर मेहरबानी की बारिश हो रही है।

म.मो. - मीडिया में तो आपकी ही चर्चा है ?

माल्या - टुकड़ख़ोरों की बात न करो। मेरा मुंह खुला तो इस पूरी मीडिया की पोल खोल कर रख दूंगा। इन सब को मैंने काणा कर रखा है। वकील की मार्फत चेतावनी भी भेज दी है, जल्द ही ससुरे ठन्डे पड़ जायेंगे।

म.मो.- चलो मोदी और जेटली ने आपको भगाया है तो भी क्या कांग्रेसी आपको आराम से छोड़ेंगे?

माल्या - क्या बात करते हो ? कांग्रेसियों ने ही तो मुझे आठ हजार करोड़ का कर्जा दिलाया था। ये कमीशन चोर भला क्या मुंह खोलेंगे! क्वात्रोच्चि को भगाने में सोनिया सरकार की भूमिका सभी को पता है। यही दलील देकर तो जेटली जी मेरे मामले में भाजपा सरकार का बचाव कर रहे हैं।

म.मो. - तो क्या भोपाल गैस त्रासदी वाले भगोड़े एंड्रसन की तरह आप भी भारतीय अदालतों का सामना करने कभी वापस नहीं आयेंगे ?

माल्या - एंडरसन अमेरिकी नागरिक था और भारतीय अदालतों की कोर्पोरेट परस्ती को नहीं जानता था। मेरा मामला ललित मोदी जैसा है। हमें भारतीय अदालतों पर पूरा भरोसा है। हमारी अदालतें हमारी मदद नहीं करेंगी तो कौन करेगा। सलमान खान के बरी होने के बाद हम पैसे वालों का भारतीय अदालतों में भरोसा और भी बढ़ गया है। आमीन ।

माल्या बरास्ता एंडरसन यानी राजीव राह पर मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनके वित्त मन्त्री अरूण जेटली भी अब फ़रार कार्पोरेट विजय माल्या की मेहरबानी से कांग्रेसी सरकारों के समकक्ष होने का दावा कर सकते हैं। दिसम्बर 1984 के भोपाल गैस त्रासदी के मुख्य अभियुक्त यूनियन कार्बाइड के अध्यक्ष एंडरसन का पलायन तत्कालीन कांग्रेसी प्रधानमंत्री राजीव गांधी और मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह ने आयोजित किया था। तब से बीसियों साल तक एंडरसन को भारतीय न्यायालयों के समन जाते रहे और वह अमेरिका में बैठा, कूड़ेदान में फ़ेंकता रहा। विजय माल्या के मामले में भी कुछ ऐसा ही होने जा रहा है। माल्या भारतीय बैंकों का 9000 करोड़ का कर्ज़ डकार कर फ़रार हो गया है। ऐसा मोदी और जेटली की पूर्ण सहमति के बिना संभव नहीं हो सकता था। समस्त सम्बन्धित सरकारी विभागों, सीबीआई समेत, की निगरानी माल्या से हटाइ गयी और उसे अपनी काली दौलत के साथ सुरक्षित पलायन का मौका दिया गया। अब भारतीय अदालतें व अन्य सम्बन्धित नियामक समन भेजते रहेंगे और वह उन्हें कूड़ेदान में फ़ेंकता रहेगा। ऐसा ही एक हाई-प्रोफ़ाईल मामला क्वात्रोच्चि का भी है जो बोफ़ोर्स मामले का अभियुक्त था। उसे भी सोनिया की कांग्रेसी सरकार ने देश से भागने में पूर्ण सहयोग किया। माल्या के मामले में कांग्रेस द्वारा भाजपा सरकार पर तोहमत लगाये जाने से तिलमिलाये जेटली ने उन्हें क्वात्रोच्चि के पलायन की याद दिलाई। हालांकि जेटली की हिम्मत एंडरसन प्रसंग को छेड़ने की नहीं हुई। क्यों? क्योंकि उस दौर में जेटली स्वयं एंडरसन का वकील रहा था।

मीडिया ने भी माल्या प्रकरण को बहुत देर से और निहायत दबी जबान में उठाया है। क्यों? क्योंकि ज्यादातर मीडिया को माल्या ने अपने पैसों के जलवे से चकाचौंध कर रखा था।